उपसंहार

उपसंहार

मेहरुन्निसा परवेज का नाम साठोत्तर महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय है। वे छत्तीसगढ़ की पहली लेखिका है। उन्होंने सन् १९६३ में साहित्य में अपना पदार्पण किया । उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, लेख एवं संस्मरण के द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। परवेज जी द्वारा प्राप्त महत्त्वपूर्ण देन के रूप में हिंदी साहित्य में एक मुस्लिम लेखिका ने स्थान पा लिया तथा मुस्लिम तथा समस्त नारी जाति के दु:ख को वाणी देने की उन्होंने पूरी कोशिष की है। उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक विषमता, धार्मिक अंधश्रद्धा, शोषण, कुरीतियाँ अदि का चित्रण किया है।

मेहरुन्निसा ने अपने साहित्य के माध्यम से देहाती तथा शहरी, गरीब तथा अमीर नारी की समस्याओं को स्वर दिया है। नारी को पत्नी, प्रेमिका, दासी, भोग्या के रूप में चित्रित कर नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। नारी का विवाह, प्रेम, सेक्स की समस्या को जिस स्पष्टता से मेहरुन्निसा जी ने व्यक्त किया है यह बात उनके परिवार तथा संस्कारों को देखते हुए बड़ी साहस की लगती है। गरीब तथा शहरी मध्यवर्ग के आर्थिक विषमता का चित्रण देखकर लगता है लेखिकाने सामाजिक विषमता का चित्र खींचा है। समाज में प्रचलित विवाह, प्रेम, काम जैसी धारणाओं को नये विचारों से बदलने की जरूरत महसूस की है। बलात्कारीता, पति से पीड़ित नारी के बारे में सामाजिक नजरिया बदलना आवश्यक माना है। मेहरुन्निसा जी की विशेषता है कि इन्होंने प्रगति की ओर उन्मुख होते वक्त पुराना तहस-नहस करने की धारणा व्यक्त नहीं

की है, तो जमाने के साथ बदलने का रवैया अपनाया है। मेहरुन्निसा जी के साहित्य का अध्ययन करने के बाद लगता है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में एक बहुत ही गहरा संबंध है। उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी सहा, देखा, अनुभव किया उसे ही अपने साहित्य में चित्रित किया है। इसीलिए उनका साहित्य सजीव लगता है।

मेहरुन्निसा परवेज द्वारा लिखित ' अकेला पलाश ' एक सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास नायिका तहमीना के पौरूषहीन पति एवं सुंदर एवं स्वस्थ प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखा गया है। इसके अंतर्गत लेखिका ने दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन की समसया की ओर निर्देश किया है। लेखिका ने विवाहेत्तर संबंध, अंतर्जातीय विवाह, वैवाहिक जीवन की समस्याएँ, उच्च-पदपर कार्यरत नारी की समस्याएँ, दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगार आदि अनेक सामयिक विषयों को उजागर किया है। लेखिका ने इस उपन्यास में नारीवादी चेतना को जागृत किया है।

' अकेला पलाश ' की कथावस्तु एक सफल कथावस्तु मानी जा सकती है। इस उपन्यास की पूरी कथा नायिका तहमीना के इर्द-गिर्द मँड़राती है। इसमें मुख्य कथा तहमीना की है। इस मुख्य कथा को पुष्टि देने के लिए अनेक सहायक कथाओं का अंतर्भाव प्रस्तुत उपन्यास में किया है। उनमें तुषार और तहमीना की कथ, तहमीना और जमशेद की कथा तहमीना और नाहिद की कथा, तहमीना-विपुल की कथा आदि का समावेश है। कथानक में सहजता एवं रोचकता होने के कारण पाठक उपन्यास को जिज्ञासावश पढ़ता चला जाता है। उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत सुंदर, सुगठित, प्रभावशाली, मौलिक सांकेतिक, जीवनानुभूति से जुड़ी, समस्त जीवन को रेखांकित करनेवाली, जीवन का मूल्यांकन करनेवाली, कौतुहलवर्धक एवं रोचक बन पड़ी है।

लेखिका ने लगभग बाईस प्रतयक्ष तथा अप्रत्यक्ष पात्रों का चयन किया है। इसमें तहमीना प्रमुख पात्र है। सहायक पात्र, गौण पात्रों का समावेश भी कथा की जरूरत के अनुसार किया गया है। इसके साथ-साथ चरित्र-चित्रण की विशेषताओं को भी स्पष्ट किया है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका अपनों द्वारा ही अकेली रह जाती है, उसके अपने ही उसका इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। चरित्र-चित्रण के अंतर्गत लेखिका ने तहमीना की माता-पिता द्वारा हुई उपेक्षा, दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन के कारण उसकी मानसिक और शारीरिक घुटन, प्रेमी से धोखा खा जानेपर उसके जीवन में आया बिखराव और अंत में अपने दु:ख और समस्याओं को दूर रखकर अपने कर्तव्य की ओर अग्रसर होने का उसका आत्मविश्वास आदि का मार्मिक चित्रण किया है। सहायक पात्रों में जमशेद का स्वार्थीपन, तुषार की व्यावहारिकता, नाहिद की गंभीरता, विपुल की यथार्थ को स्वीकारने की वृत्ती आदि बातें दिखाई देती है। पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से ' अकेला पलाश ' एक सफल उपन्यास है।

' संवाद और भाषा शैली ' में लेखिका ने काफी सफलता पायी है। कथोपकथन के अंतर्गत उन्होंने व्याख्यात्मक, व्यावहारिक, नाटकीय, मार्मिक, हास्य-व्यंग्यात्मक, गंभीर, अलंकारिक कथोपकथन का आयोजन किया है। इसके अंतर्गत संक्षिप्त चुटीले, मर्मस्पर्शी, तथा नाटकीय संवादों का आयोजन किया है। इसके साथ-साथ भाषा-शैली के अंतर्गत पात्रानुकूल भाषा, चित्रात्मक भाषा, अलंकारों, कहावतों, मुहावरों, लोकोक्तियों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। इस उपन्यास के संवाद कथानक को गतिशील बनाते हैं। इसमें कई शैलियों का प्रयोग किया गया है। इन सभी की वजह से उपन्यास के संवादों की सहजता में निखार आ गया है। देशकाल तथा

वातावरण में आंतरिक वातावरण तथा बाह्य वातावरण संबंधी चित्रण का मुल्यांकन भी किया है।

उपन्यास का शीर्षक संक्षिप्त और रोचक है। प्रमुख पात्र की स्थिति के आधारपर प्रतीकात्मक रूप के आधारपर इसका शीर्षक रखा गया है, जो बिल्कुल उचित लगता है। ' अकेला पलाश ' इन दो शब्दों में ही तहमीना का अकेलापन पाठक महसूस करते है। उपन्यास में उद्देश्य का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। माता-पिता द्वारा बच्चों की उपेक्षा, पति-पत्नी के बीच सामंजस्य का अभाव, नारी को बंधन में रखने की समाज की प्रवृत्ति आदि के घातक दुष्परिणामों को चित्रित करना लेखिका का उद्देश्य रहा है। अत: अपने उद्देश्यपूर्ति में मेहरुन्निसा परवेज काफी सफलता पा चुकी है। तत्त्वों के आधारपर विवेचन-विश्लेषण करने पर - ' अकेला पलाश ' एक सफल उपन्यास साबित होता है।

मेहरुन्निसा परवेज ने - ' अकेला पलाश ' में नारी के विविध रूपों का सफलता से चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने तहमीना के माध्यम से आधुनिक नाारी की कुण्ठा, अंतर्द्वन्द्व तथा परेशानी का सूक्ष्म चित्रण किया है। साथ ही भारतीय परिवेश से, संस्कृति से बंधी नारी और उसकी उलझन का बोध किया है। उपन्यास की नायिका तहमीना जीवन की कठोरता, कटुता तथा विषमताओं को सहने का प्रयास करती है, अपने को समाज तथा परिवेश के अनुकल बनाने का प्रयास करती है। यह प्रयास करते समय उसे अनेक मानसिक यातनाओं का सामना करना पड़ता है। वह बाह्य रूप से अपना संयमित, तटस्थ एवं सुचारू रूप प्रस्तुत करती है परंतु अपने अंतरंग को बदलने में पूर्णत: असमर्थ रहती है। मानसिक टूटन के कारण वह अपनी शांति, चैन खोती है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका द्वारा चित्रित माँ रूप, दया, क्षमा, ममता, स्नेह, वात्सल्य और सेवा की प्रतिमूर्ति है, तो पत्नी रूप निस्वार्थ एवं पवित्र प्रेम से सम्पन्न है। बहन का स्नेहमयी तथा सास का असत् रूप चित्रित किया है। परवेज जी ने इस उपन्यास की नायिका के शाश्वत पीड़ा को वाणी दी है। उपेक्षा, अन्याय एवं अत्याचारों को झेलती हुई नायिका की करूण कथा में अबला को सबला बनवाने का सफल प्रयास करती है। वह नारी अपने जीवन की विषमताओं से संघर्ष करती हुई कर्तव्य की ओर उन्मुख होती है। परिस्थितियों के जाल में फँसी नारी दुरावस्था होने के बाद भी परिस्थिति से समझौता करती है। किन्तु विद्रोह प्रदर्शित नहीं करती है। इस उपन्यास की कई नारियाँ समाज सेविका एवं मानवतावादी के रूप में आधुनिक नारी के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है, तो कई नारियाँ ऐसी भी है जो समाज सेवा के नामपर अपना लाभ उठाती हैं। इस उपन्यास की संन्यासिनी नारी दिखावे की है। नारी मूलत: कमजोर मानी जाती है, उसका चित्रण संवेदना से किया गया है। ' अकेला पलाश ' की नारी कभी-कभी दिल से और परिस्थिति के कारण अकेली रह जाती है। इसमें शोषित नारी का स्तर पीड़ादायी है। ' अकेला पलाश ' के माध्यम से मेहरुन्निसा जी ने नारी के सत् एवं असत् दोनों पक्षों का चित्रण कर नारी के विविध रूपों पर प्रकाश ड़ाला है।

वर्तमान युग समस्याओं का युग माना जाता है। वर्तमान युग में समस्याओं की जटिलता ने समाज को चारों ओर से घेर लिया है। अत: साहित्य में समस्या का चित्रण करना लेखकों के लिए स्वाभाविक हो गया है।

' अकेला पलाश ' में लेखिकाने वैवाहिक समस्याएँ, नारी समस्याओं के साथ साथ अन्य सामाजिक समस्याओं की ओर पाठकों का

ध्यान आकृष्ट किया है। भारतीय संस्कारक्षम मन विवाह को एक आस्था तथा एक धार्मिक कृत्य मानता आया है, किन्तु आज विवाह-विषयक दृष्टि धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है। औद्योगिकरण, तकनीकी विकास, नारी जागरण एवं शिक्षा के व्यापक प्रसार ने समाज में आमुलाग्र परिवर्तन आ गया है। आज विवाह की धारणा निरर्थक होती जा रही है। लेखिका ने अपने उपन्यास में वैवाहिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है, जिसमें प्रेमविवाह, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, कम उम्र में होनेवाले विवाह की समस्याओं को और दुष्परिणामों का चित्रण किया है। आज भी हमारे समाज में नारी को समानता नहीं है। विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर भी उसे अपना जीवन साथी चुनने का हक नहीं होता है और मजबूरी के कारण विवाह करनेपर पूरा जीवन किस प्रकार बरबाद होता है इसका चित्रण लेखिका ने मार्मिकता से किया है।

स्वंतत्रता के पश्चात अब नारी शिक्षित होकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरूषों के समकक्ष अधिकारों और पदोंपर कार्यरत है। आधुनिक युग में शिक्षा के व्यापक प्रसार ने नारी में शिक्षा के प्रति रूचि निर्माण हो गयी है। ' अकेला पलाश ' की नारी उच्चशिक्षित है। उच्चशिक्षित होने के कारण वह नौकरी करती है और अपने परिवार की जिम्मेदारी भी लेती है, जिसके कारण उसके विवाह में बाधाएँ आती है। नौकरी पेशा नारी को घर-बाहर की समस्याएँ सताती रहती है। नौकरी करनेपर और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के बावजूद नारी को इतना स्वातंत्र्य नहीं कि वह अपने मन से कुछ पैसे खर्च कर सके । मेहरुन्निसा परवेज खुद एक नारी होने के कारण उन्होंने नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है नारी की मानसिकता, उसकी धार्मिकता, उसका कुण्ठाग्रस्त जीवन, अशिक्षित नारी की कमजोरी,

उच्चशिक्षित नारी की असहायता,विधवा नारी तथा परित्यक्ता नारी की मजबूरी आदि को लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से सफलता से चित्रित किया है।

वैवाहिक समस्याएँ, नारी समस्याओं के अतिरिक्त लेखिका ने ' अकेला पलाश ' में अन्य सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया है। जिसमें कहीं सरकारी दफ्तरों का भ्रष्टाचार है, तो कहीं धार्मिक क्षेत्र की अनैतिकता, कहीं बेकारी की समस्या है तो कहीं हरिजन समस्या । लेखिका का उद्देश्य ही यह रहा है कि समाज में स्थित इन समस्याओं को पाठकों तक पहुँचाना जिसमें वह काफी हद तक सफल हो चुकी है।

' अकेला पलाश ' की इन विशेषताओं को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने इसके अंतर्गत मध्यवर्ग, आदिवासियों का आक्रंदन, नारी के विभिन्न दु:खों और समस्याओं को वाणी देने का प्रयास किया है। यहउपन्यास पाठक के मन को छू लेता है। इसके पात्रों के साथ पाठक तादात्मिकरण स्थापित करता है। इन पात्रों के सुख-दुखों में खूद को देखने का प्रयास करता है। ' अकेला पलाश ' की नायिका तहमीना का जीवन बहुत कुछ लेखिका के जीवन से मिलता-जुलता है। परवेज जी ने जीवन के विभिन्न-विभिन्न दु:खों के क्षणों से इस उपन्यास की कथा ली है, जो पढ़ने पर दु:खी भी करती है और सुखी भी, साथ ही हमारा मन कथ्य की गंभीरता एवं संवेदना की गहराई के कारण भटक जाता है। वह भूमि जहाँ उपन्यास की कथा घटित हुई है, एक बेचैनी हमारे मनपर छा जाती है, जीवन की विडम्बना एवं असहाय असंगति को देखकर बाद में जिद्दी भ्रमर की तरह हमारा पीछा करती है। उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने विविध व्यक्तियों का रेखांकन किया है, जिसका अपना एक अलग अंदाज है, अलग जीने का ढंग है।

अत: ' अकेला पलाश ' मेहरुन्निसा परवेज का एक श्रेष्ठ और सफल उपन्यास कहा जा सकता है, जिसके कारण हिंदी साहित्य में उनका स्थान और भी आदरणीय हो जाता है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

१ मेहरुन्निसा परवेज नारी की स्थिति से अच्छे से परिचित हैं। उनके मन में मध्यवर्ग की नारी के प्रति आस्था है। आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी को केंद्र बिंदु बनाकर लिखनेवाली लेखिकाओं में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण है।

२ ' अकेला पलाश ' को उपन्यास के तत्त्वों पर परखने के बाद बिल्कुल सफल सिद्ध होता है। कथानक, पात्र-चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल-वातावरण, उद्देश्य, शीर्षक आदि सभी कसोटियोंपर ' अकेला पलाश ' सफल प्रतीत होता है।

३. ' अकेला पलाश ' नारी प्रधान उपन्यास है। मेहरुन्निसा ने इसमें नारी के किसी भी रूप को अछूता नहीं रखा है। इसके माध्यम से नारी का सामाजिक स्थान तथा उसकी विविध भूमिकाएँ प्रस्तुत की हैं।

४ ' अकेला पलाश ' में चित्रित वैवाहिक समस्याएँ, नारी समस्याएँ तथा अन्य सामाजिक समस्याएँ केवल लेखकीय दस्तावेज न होकर प्रासंगिक लगती हैं और ये समस्याएँ युगीन परिवेश का अभिन्न अंग हैं।

५ नारी को अपनी समस्याओं का डटकर मुकाबला करना चाहिए, जीवन में अपनी राह खुद बनानी चाहिए तथा अपना

सुख दुख ढँढने प्रयास करना चाहिए यही सींख इस उपन्यास के अध्ययन से नारी को प्राप्त होती हैं ।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास को लेकर इस दिशा में भी स्वतंत्र रूप से कार्य किया जा सकता है -

१ मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासोंमें चित्रित मुस्लिम समाज ।

२ मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन ।

३ मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी-जीवन ।